कथा सरिता

तो हम क्यों नहीं?

यह जापान में घटी एक सच्ची घटना है। अपने मकान का नवीनीकरण करने के लिए एक जापानी अपने मकान की दीवारों को तोड़ रहा था। जापान में लकड़ी की दीवारों के बीच खाली जगह होती है, यानी दीवारें अंदर से पोली होती हैं। जब वह लकड़ी की दीवारों को चीर-तोड़ रहा था तभी उसने देखा कि दीवार के अंदर की तरफ लकड़ी पर एक छिपकली, बाहर से उसके पैर पर ठुकी कील के कारण एक ही जगह पर जमी पड़ी है। जब उसने यह दृश्य देखा तो उसे बहुत दया आई पर साथ ही वह जिज्ञासु भी हो गया। जब उसने आगे जाँच की तो पाया कि वह कील तो उसके मकान बनते समय पाँच साल पहले ठोकी गई थी!

एक छिपकली इस स्थिति में पाँच साल तक जीवित थी! दीवार के अंधेरे पार्टीशन के बीच, बिना हिले डुले। यह अविश्वसनीय, असंभव और चौंका देने वाला था! उसकी समझ से यह परे था कि एक छिपकली, जिसका एक पैर, एक ही स्थान पर पिछले पाँच साल से कील के कारण चिपका हुआ था और जो अपनी जगह से एक इंच भी न हिली थी, वह कैसे जीवित रह सकती है?

अब उसने यह देखने के लिए कि वह छिपकली अब तक क्या करती रही है और कैसे अपने भोजन की ज़रूरत को पूरा करती रही है, अपना काम रोक दिया। थोड़ी देर बाद, पता नहीं कहाँ से, एक दूसरी छिपकली प्रकट हुई, वह अपने मुँह में भोजन दबाये हुए थी, उस फँसी हुई छिपकली को खिलाने के लिए! उफ्फ! वह सन्न रह गया! यह दृश्य उसके दिल को अंदर तक छू गया।

एक छिपकली जिसका एक पैर कील से ठुका हुआ था, को एक दूसरी छिपकली पिछले पाँच साल से भोजन खिला रही थी, अद्‌भुत! दूसरी छिपकली ने अपने साथी के बचने की उम्मीद नहीं छोड़ी थी। वह पहली छिपकली को पिछले पाँच साल से भोजन करवा रही थी। अजीब है, एक छोटा सा जन्तु तो यह कर सकता है पर हम मनुष्य जैसे प्राणी, जिसे बुद्धि में सर्वश्रेष्ठ होने का आशीर्वाद मिला हुआ है, नहीं कर सकता।

कृप्या अपने प्रिय लोगों को कभी न छोड़ें! लोगों को उनकी तकलीफ के समय अपनी पीठ न दिखायें! अपने आपको महाज्ञानी या सर्वश्रेष्ठ समझने की भूल न करें! आज आप सौभाग्यशाली हो सकते हैं पर कल तो अनिश्चित ही है और कल चीज़ें बदल भी सकती हैं! प्रकृति ने हमारी अंगुलियों के बीच शायद जगह भी इसीलिए दी है ताकि हम किसी दूसरे का हाथ थाम सकें!

आप आज किसी का साथ दीजिये, कल कोई न कोई आपका साथ देगा! धर्म चाहे जो भी हो, बस अच्छे इंसान बनो, हिसाब हमारे कर्म का होगा, धर्म का नहीं।

श्रद्धा और समर्पण

एक गाय घास चरने के लिए एक जंगल में चली गई। शाम ढ़लने के करीब थी। उसने देखा कि एक बाघ उसकी तरफ दबे पांव बढ़ रहा है। वह डर के मारे इधर-उधर भागने लगी। वह बाघ भी उसके पीछे दौड़ने लगा। दौड़ते हुए गाय को सामने एक तालाब दिखाई दिया। घबराई हुई गाय उस तालाब के अंदर घुस गई। वह बाघ भी उसका पीछा करते हुए तालाब के अंदर घुस गया। तब उन्होंने देखा कि वह तालाब बहुत गहरा नहीं था। उसमें पानी कम था और कीचड़ से भरा हुआ था। उन दोनों के बीच की दूरी काफी कम हुई थी। लेकिन अब वह कुछ नहीं कर पा रहे थे। वह गाय उस कीचड़ के अंदर धीरे-धीरे धंसने लगी। वह बाघ भी उसके पास होते हुए भी उसे पकड़ नहीं सका। वह भी धीरे-धीरे कीचड़ के अंदर धंसने लगा। दोनों भी करीब-करीब गले तक उस कीचड़ के अंदर फंस गए। दोनों हिल भी नहीं पा रहे थे। गाय के करीब होने के बावजूद वह बाघ उसे पकड़ नहीं पा रहा था। थोड़ी देर बार गाय ने उस बाघ से पूछा, क्या तुम्हारा कोई गुरू या मालिक है? बाघ ने गुर्राते हुए कहा कि मैं तो जंगल का राजा हूँ। मेरा कोई मालिक नहीं। मैं खुद ही जंगल का मालिक हूँ। गाय ने कहा, लेकिन तुम्हारे उस शक्ति का यहाँ क्या उपयोग है? उस बाघ ने कहा कि तुम भी तो फंस गई हो। तुम्हारी भी तो हालत मेरे जैसी है।

गाय ने मुस्कुराते हुए कहा, बिल्कुल नहीं। मेरा मालिक जब शाम को घर आयेगा और मुझे वहां पर नहीं पायेगा तो वह ढूंढ़ते हुए यहाँ ज़रूर आयेगा और मुझे इस कीचड़ से निकाल कर अपने घर ले जाएगा। तुम्हें कौन ले जाएगा? थोड़ी ही देर में सच में ही एक आदमी वहाँ पर आया और गाय को कीचड़ से निकालकर अपने घर ले गया। जाते समय गाय और उसका मालिक दोनों एक दूसरे की तरफ कृतज्ञता पूर्वक देख रहे थे। वे चाहते हुए भी उस बाघ को कीचड़ से नहीं निकाल सकते थे, क्योंकि उनकी जान के लिए वह खतरा था।

गाय समर्पित हृदय का प्रतीक है। बाघ अहंकारी मन है और मालिक सद्‌गुरू का प्रतीक है। कीचड़ यह संसार है। इस संसार में किसी पर निर्भर नहीं होना अच्छी बात है लेकिन उसकी अति नहीं होनी चाहिए। आपको किसी सच्चे मित्र, किसी सहयोगी की हमेशा ही ज़रूरत होती है।

टूटी चप्पल

पता नहीं ये सामने वाला सेठ हफ्ते में तीन-चार बार अपनी चप्पल कैसे तोड़ आता है! मोची बुदबुदाया, नज़र सामने बड़ी किराना दुकान पर बैठे मोटे सेठ पर थी। हर बार जब उस मोची के पास कोई काम ना होता तो उस सेठ का नौकर सेठ की टूटी चप्पल बनाने को दे जाता। मोची अपनी पूरी लगन से वो चप्पल सी देता, अब तो दो-तीन महीने नहीं टूटने वाली। सेठ का नौकर आता और बिना मोलभाव किए पैसे देकर उस मोची से चप्पल ले जाता। पर दो-तीन दिन बाद फिर वही चप्पल टूटी हुई उस मोची के पास पहुंच जाती। आज फिर सुबह हुई, सूरज निकला। सेठ का नौकर दुकान में झाड़ू लगा रहा था। और सेठ अपनी चप्पल तोड़ने में लगा था। पूरी मशक्कत के बाद जब चप्पल न टूटी तो उसने नौकर को आवाज़ लगाई। अरे रामधन! इसका कुछ कर, ये मंगू भी पता नहीं कौन से धागे से चप्पल सीता है, टूटती ही नहीं। रामधन आज सारी गांठें खोल लेना चाहता था। सेठ जी मुझे तो ये हर बार का नाटक समझ में नहीं आता। खुद ही चप्पल तोड़ते हो और फिर खुद ही जुड़वाने के लिए उस मंगू के पास भेज देते हो।

सेठ को चप्पल तोड़ने में सफलता मिल चुकी थी। उसने टूटी चप्पल रामधन को थमाई और रहस्य की परतें खोली। देख रामधन, जिस दिन मंगू के पास कोई ग्राहक नहीं आता उस दिन चप्पल तोड़ता हूँ क्योंकि मुझे पता है मंगू गरीब है, पर स्वाभिमानी है। मेरे इस नाटक से अगर उसका स्वाभिमान और मेरी मदद दोनों शर्मिंदा होने से बच जाते हैं तो क्या बुरा है। आसमान साफ था पर रामधन की आँखों के बादल बरसने को बेकरार थे।

दुर्ग-छ.ग.। 'राजयोग द्वारा स्वस्थ सुखी समाज' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए विधायक अरुण वोरा, उद्योगपति कमल रूंगटा, सीनियर एडवोकेट रामपाटणकर, ब्र.कु. रीटा तथा ब्र.कु. रुपाली।

तासगांव-महा.। स्वामी रामानंद भारती विद्यामंदिर के प्राचार्य चव्हाण सर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुम्बई। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. वैशाली, टीचर्स व स्टाफ।

चन्द्रपुर-महा.। हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. में 'राजयोग से खुशहाल जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दीपक, सीनियर मैनेजर विनोद घई, डेप्युटी मैनेजर प्रशांत उराडे एवं ऋषभ फौजदार, एक्ज़ीक्युटिव मैनेजर तथा ड्राइवर्स।

जबलपुर-नेपियर टाउन। कैंसर से जंग जीते भाई बहनों के सम्मान समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. श्याम रावत,कैंसर रोग विशेषज्ञ,मेडिकल कॉलेज, नवनीत सक्सेना,डीन,मेडिकल कॉलेज, डॉ. दीपक साहू,सचिव,इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, ब्र.कु. भावना, डॉ. राजेश जैन,असिस्टेंट प्रोफेसर,कैंसर विभाग,मेडिकल कॉलेज तथा प्रो. डॉ. लक्ष्मी सिंगोतिया।

सीतापुर-उ.प्र.। 'सकारात्मक चिंतन द्वारा तनावमुक्त' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में बिज़नेसमैन नीरज जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. भगवान तथा ब्र.कु. रश्मि।

राजगढ़-म.प्र.। गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए रमेश सक्सेना, रामबाबू शर्मा, शिव नागदेव, ब्र.कु. मधु व अन्य।

राजूला-गुज.। अल्ट्रा टेक सीमेंट कंपनी में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए कंपनी के यूनिट हेड त्रिपाठी जी। साथ हैं ब्र.कु. अनु, ब्र.कु. सरोज तथा ब्र.कु. संजीव।

दुर्ग-छ.ग.। प्रस्तावित निर्माणाधीन आनंद सरोवर बघेरा फेज वन गृह प्रवेश के समय रिबन काटते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा,माउंट आबू, इंदौर ज़ोन क्षेत्रिय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी तथा ब्र.कु. रीटा। साथ हैं अन्य ब्र.कु.भाई-बहनें।

अबोहर-पंजाब। उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू द्वारा मालती ज्ञान पीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिक्षिका अनामिका बंसल को सेवाकेन्द्र पर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पलता। साथ हैं लेखक परिषद के अध्यक्ष राज सदोष जी। इस मौके पर मालती ज्ञान पीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिक्षिका नवजोत कौर तथा प्राचार्य मोहन लाल कुदाल को भी सम्मानित किया गया।